हे सिंह वाहिनी मां दुर्गे | By Shivangi Pathak |

हे सिंह वाहिनी मां दुर्गे
अब मैंने तुम्हें पहचाना है।
हे सिंह वाहिनी मां दुर्गे
अब मैंने तुम्हें पहचाना है।
भारत के कोने-कोने में
हर जगह पे वास तुम्हारा है।

पूरब की दिशा में गुवाहाटी
जो अति पावन कहलाता है,
निज रूप बनाकर प्रकट हुई,
कामाख्या नाम तुम्हारा है।
हे सिंह वाहिनी मां दुर्गे
अब मैंने तुम्हें पहचाना है।

पश्चिम की दिशा में जूनागढ़
जो अति पावन कहलाता है,
निज रूप बनाकर प्रकट भई,
मां अंबे नाम तुम्हारा है।
हे सिंह वाहिनी मां दुर्गे
अब मैंने तुम्हें पहचाना है।

उत्तर की दिशा में जम्मू दीप
जो अति पावन कहलाता है,
निज रूप बनाकर प्रकट हुई,
मां वैष्णवी नाम तुम्हारा है।
हे सिंह वाहिनी मां दुर्गे
अब मैंने तुम्हें पहचाना है।

दक्षिण की दिशा में कलकत्ता
जो अति पावन कहलाता है,
निज रूप बनाकर प्रकट हुई,
मां काली नाम तुम्हारा है।
हे सिंह वाहिनी मां दुर्गे
अब मैंने तुम्हें पहचाना है।
भारत के कोने-कोने में
हर जगह पे वास तुम्हारा है।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b9%e0%a5%87-%e0%a4%b8%e0%a4%bf%e0%a4%82%e0%a4%b9-%e0%a4%b5%e0%a4%be%e0%a4%b9%e0%a4%bf%e0%a4%a8%e0%a5%80-%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%82-%e0%a4%a6%e0%a5%81%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%97%e0%a5%87-by-s/